بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat
دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सैय्यदना ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक 10.06.16 बैतुल फ़तूह लंदन।

रोज़े का वास्तविक उददेश्य तो यह है कि तुम तक़्वा में प्रगति करो। एक महीना प्रशिक्षण का उपलब्ध किया गया है उसमें अपने तक़्वा के स्तर को बढ़ाओ, यह तक़्वा तुम्हारे नेकियों के स्तर को भी बुलन्द करेगा, यह तुम्हें नेकियों पर स्थापित भी करेगा तथा अल्लाह तआला की निकटता भी दिलाएगा और इसी प्रकार पिछले गुनाह भी क्षमा होंगे।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सूरः अल-बक़रः की निम्नलिखित आयत तिलावत फ़रमाई तथा अनुवाद बयान फ़रमाया-

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا كُتِبَ عَلَيۡكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تَتَّقُوۡنَ۔

हे वे लोगो! जो ईमान लाए हो तुम पर रोज़े उसी प्रकार अनिवार्य कर दिए गए हैं जिस प्रकार तुम से पहले लोगों पर अनिवार्य किए गए थे ताकि तुम तक़्वा धारण करो।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- इस आयत में अल्लाह तआला ने एक ऐसी बात की ओर ध्यान आकर्षित कराया है जो हमारा लोक प्रलोक संवारने वाली है। और वह बात यह है कि لَعَلَّكُمۡ تَتَّقُوۡنَ अतः रोज़ों के निर्धारण का इस कारण से महत्व नहीं है कि इस्लाम से पहले धर्मों में भी रोज़े निर्धारित किए गए थे अपितु महत्व इस बात का है, ताकि तुम तक़्वा धारण करो, ताकि तुम बुराईयों से बच जाओ। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ख़ुदा तआला को तुम्हें केवल भूखा रखने की कोई आवश्यकता नहीं है। रोज़े का वास्तविक उददेश्य तो यह है कि तुम तक़्वा में प्रगति करो। एक महीना प्रशिक्षण का उपलब्ध किया गया है उसमें अपने तक़्वा के स्तर को बढ़ाओ, यह तक़्वा तुम्हारे नेकियों के स्तर को भी बुलन्द करेगा, यह तुम्हें नेकियों पर स्थापित भी करेगा तथा अल्लाह तआला की निकटता भी दिलाएगा और इसी प्रकार पिछले गुनाह भी क्षमा होंगे। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक अवसर पर फ़रमाया कि जिस व्यक्ति ने रमज़ान के रोज़े ईमान की अवस्था में रक्खे तथा अपनी आत्मा का आंकलन करते हुए रक्खे, उसके पिछले पाप क्षमा कर दिए जाएँगे। अतः जब पिछले पाप क्षमा हो जाएँ और फिर तक़्वा धारण करके इंसान इस पर क़ायम हो जाए तो ऐसा इंसान निःसन्देह रमज़ान में से गुज़रने के उददेश्य में सफल हो गया बल्कि उसने अपने जीवन का लक्ष्य प्राप्त कर लिया। तक़्वा के लाभ जो हमें क़ुरआन-ए-करीम में मिलते हैं उसमें एक लाभ अल्लाह तआला ने स्वयं यह बयान फ़रमाया है कि فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰٓاُولِى الۡاَلۡبَابِ لَعَلَّكُمۡ تُفۡلِحُوۡنَ۔

अतः ऐ बुद्धिमानो, अल्लाह का तक़्वा धारण करो ताकि तुम सफलता प्राप्त करो, उन्नति प्राप्त करो। अतः कौन है जो सफलता प्राप्त नहीं करना चाहता। संसारिक सफलताएँ तो यहीं रह जानी हैं, वास्तविक सफलता तो वह है जो इस दुनया की भी सफलता है तथा अगली दुनया की भी सफलता है और यह अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि यदि तुम में बुद्धि है तो सुन

लो कि तक़्वा पर स्थापित होने से ही वह सफलता मिलेगी।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि तक़्वा कोई छोटी चीज़ नहीं है उसके द्वारा उन समस्त शैतानों का मुक़ाबला करना होता है जो इंसान की प्रत्येक भीतरी शक्ति एंव सामर्थ्य पर ग़ल्बः पाए हुए हैं। ये समस्त शक्तियाँ तामसिक वृत्ति की अवस्था में इंसान के भीतर शैतान हैं। फ़रमाया- ज्ञान तथा बुद्धि ही अनुचित रूप में प्रयोग होकर शैतान बन जाते हैं। मुत्तक़ी (तक़्वा वाला) का काम उनको तथा ऐसा ही अन्य समस्त शक्तियों को संतुलित करना है।

फिर आप फ़रमाते हैं कि तक़्वा का विषय सूक्ष्म है, उसको प्राप्त करो। ख़ुदा की महानता दिल में बिठाओ, जिस के कर्मों में कुछ भी दिखावा हो ख़ुदा उसके कर्मों को वापस उलटा कर उसके मुंह पर मारता है। मुत्तक़ी (तक़्वा वाला) बनना कठिन है। उदाहरणतः यदि कोई तुझे कहे कि तू ने क़लम चुराया है तो तू क्यूँ क्रोधित होता है, तेरा परहेज़ (अंकुश) तो केवल ख़ुदा के लिए है, यह क्रोध इस लिए हुआ कि तू सीधे तक़्वा के मार्ग पर न था। जब सचमुच ही इंसान पर अनेक मौतें न आ जाएँ, वह मुत्तक़ी नहीं बनता। फ़रमाया कि चमत्कार तथा इलहाम भी तक़्वा की भांति हैं, असल तक़्वा है। इस लिए तुम इलहाम और सपनों के पीछे न पड़ो अपितु तक़्वा प्राप्ति के पीछे लगो। जो मुत्तक़ी है उसके इलहाम भी यथार्थ हैं और यदि तक़्वा नहीं है तो इलहाम भी विश्वसनीय नहीं हैं इनमें शैतान का अंश हो सकता है। क़ुरआन शरीफ़ में तक़्वा के सुक्ष्म मार्गों को सिखलाया गया है। नबी की सम्पूर्णता, उम्मत की सम्पूर्णता को चाहती है। क्यूँकि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ातमुन्नबिय्यीन थे इस लिए आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नबुव्वत के विशेषण परिपूर्ण हुए। जो अल्लाह तआला को प्रसन्न करना चाहता है और चमत्कार देखना चाहे तथा विशेष प्रकार के चमत्कार देखना चाहे तो उसको चाहिए कि वह अपना जीवन भी विशेष चमत्कारी बना ले। अतः हमें यह क्रांति लाने की आवश्यकता है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मानने वाले हैं, आपकी उम्मत में से हैं, तो आपका सुन्दर मार्ग दर्शन हमारे लिए है तथा उसके लिए यही आवश्यक है कि अल्लाह तआला से निकटता बढ़े और वास्तविक तक़्वा पैदा हो।

फिर इस बात को भी स्पष्ट करते हुए कि प्रत्येक नेकी की जड़ तक़्वा है, फ़रमाया कि तक़्वा धारण करो, तक़्वा प्रत्येक चीज़ की जड़ है। तक़्वा का अर्थ है कि प्रत्येक सूक्ष्म से सूक्ष्म गुनाह की नस से बचना, तक़्वा इसको कहते हैं कि जिस बात में बुराई का सन्देह हो उससे भी पृथक रहें, यह नहीं कि जब प्रत्यक्षतः बुराई प्रकट हो रही है अपितु यदि कोई सन्देह भी है कि इसमें कोई बुराई हो सकती है, उससे बचो।

फ़रमाया कि दिल की नहर में से भी छोटी छोटी नहरें निकलती हैं उदाहरणतः ज़बान इत्यादि। यदि किसी की ज़बान गन्दी है, रोज़ा रखने के बावजूद लड़ाई झगड़ों तथा गाली गलौच से बाज़ नहीं आता अथवा उसके हाथों द्वारा अनुचित कार्य हो रहे हैं तो समझ लो कि उसका दिल भी पवित्र नहीं है और यह तक़्वा से दूर है।

फिर इस ओर ध्यान दिलाते हुए कि अपना जीवन निर्धनता एंव दीनता में व्यतीत करना चाहिए, आप फ़रमाते हैं कि तक़्वा वालों के लिए शर्त है वे अपना जीवन दीनता एंव निर्धनता में व्यतीत करें। यह तक़्वा की एक शाखा है जिसके द्वारा हमें अनुचित क्रोध का मुक़ाबला करना है, अकारण ही क्रोध जो है उसका मुक़ाबला करना है। क्रोध यदि उचित समय एंव उचित अवसर पर हो तो यह जायज़ है परन्तु अनुचित क्रोध, छोटी छोटी बातों पर क्रोध, लड़ाई झगड़े, इनसे बचो। फ़रमाया कि बड़े बड़े आरिफ़ों और सत्यमार्गियों के लिए अन्तिम तथा कठोर परीक्षा आक्रोष से बचना ही है। फ़रमाया कि मैं नहीं चाहता कि मेरी जमाअत वाले आपस में एक दूसरे को छोटा अथवा बड़ा समझें अथवा एक दूसरे पर गर्व करें या हीन दृष्टि से देखें। ख़ुदा

जानता है कि कौन बड़ा है या छोटा कौन है। यह एक प्रकार का अपमान है जिसमें घृणा है, डर है कि यह घृणा बीज की भांति बढ़े और उसके विनाश का कारण हो। फ़रमाया कि कुछ लोग बड़े मिलकर बड़ी शालीनता से पेश आते हैं परन्तु बड़ा वह है जो दुर्बल की बात को ध्यान पूर्वक सुने, उसकी दिल जूई करे, उसकी बात का सम्मान करे, कोई चिड़ाने की बात मुंह पर न लाए कि जिससे आघात पहुंचे।

फिर इस बात को फ़रमाते हुए कि मुत्तक़ी कौन है, आप फ़रमाते हैं कि ख़ुदा के कलाम से पाया जाता है कि मुत्तक़ी वे होते हैं जो विनम्रता एंव दयालुता के साथ चलते हैं वे अभिमानी बातें नहीं करते, उन की बात चीत ऐसी होती है जैसे छोटा, बड़े के साथ बात करता है। फ़रमाया कि हम को प्रत्येक अवस्था में वह करना चाहिए जिससे हमारा सुधार हो। अल्लाह तआला किसी का देनदार नहीं है, वह विशेष तक़्वा को चाहता है, जो तक़्वा करेगा वह उच्चतम स्तर तक पहुंचेगा।

फिर आप फ़रमाते हैं कि किस प्रकार सच्चा विवेक तथा सत्यपूर्ण बुद्धिमानी प्राप्त की जाए। फ़रमाया कि सच्चा विवेक तथा सत्यवादी बुद्धि, अल्लाह तआला की ओर झुके बिना नहीं प्राप्त हो सकती। इसी कारण से तो कहा गया है कि मोमिन के विवेक से डरो, वह अल्लाह के नूर से देखता है। वास्तविक विवेक तथा सत्यपूर्ण बुद्धिमानी कभी नहीं मिल सकती जब तक कि तक़्वा न हो।

फिर इस बात की ओर ध्यान दिलाते हुए कि यदि जमाअत में शामिल हुए हो, इस्लाम की सेवा करना चाहते हो तो फिर पहले स्वयं तक़्वा और पवित्रता धारण करो। इस्लाम की सेवा केवल बातों से नहीं होगी बल्कि हमें तक़्वा एंव पवित्रता धारण करनी पड़ेगी। आप फ़रमाते हैं कि मैं फिर इस ओर ध्यान दिलाता हूँ, पहले उद्देश्य की ओर आता हूँ अर्थात صابرو और رابطو जिस प्रकार दुश्मन के मुक़ाबले में सीमाओं पर घोड़े होना आवश्यक होते हैं ताकि दुश्मन सीमा को न लांघने पाए। इसी प्रकार तुम भी तय्यार रहो, साबिरू और राबितू की व्याख्या करते हुए फ़रमाते हैं कि सीमाओं पर घोड़े खड़े किए जाते हैं, शत्रु से बचाओ के लिए सेना खड़ी की जाती है ताकि दुश्मन हमारी सीमाओं में प्रवेश न करे। फ़रमाया- इसी प्रकार तुम भी तय्यार रहो, सैनिकों की भांति। ऐसा न हो कि शत्रु सीमाओं से आगे बढ़ कर इस्लाम को आघात पहुंचाए। फ़रमाया कि मैं पहले भी बयान कर चुका हूँ कि यदि तुम इस्लाम का समर्थन और उसकी सेवा करना चाहते हो तो पहले स्वयं तक़्वा एंव पवित्रता धारण करो जिसके कारण तुम स्वयं ख़ुदा तआला की श्रण के हिस्न-ए-हिसीन में आ सकोगे। अर्थात अल्लाह तआला की श्रण के दृढ़ दुर्ग में आ सकोगे और फिर तुम इस सेवा का सौभाग्य एंव अधिकार प्राप्त कर सकोगे। फ़रमाया कि अल्लाह तआला की कृपा सदैव मुत्तक़ियों एंव सत्य मार्गियों ही के साथ हुआ करती है। अपने आचरण एंव शिष्टाचार ऐसे न बनाओ जिनसे इस्लाम को दाग़ लग जावे। बदकारों और इस्लाम की शिक्षानुसार कर्म न करने वाले मुसलमानों से इस्लाम को धब्बा लगता है। कोई मुसलमान मदिरा सेवन कर लेता है तो कहीं उलटी करता फिरता है, पगड़ी गले में होती है, मोरियों और गन्दी नालियों में गिरता फिरता है, पुलिस के जूते पड़ते हैं, हिन्दु एंव ईसाई उस पर हंसते हैं। उसका ऐसा शरीअत के विरुद्ध कार्य उसके ही ठट्टे का कारण नहीं होता बल्कि वास्तव में उसका प्रभाव मूल इस्लाम धर्म पर पहुंचता है। अतः अपने चाल चलन और व्यवहार ऐसे बना लो कि काफ़िरों को भी तुम पर, जो वास्तव में इस्लाम पर होती है, टिप्पणी करने का अवसर न मिले।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- हमने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इस लिए माना है कि दीन में बिगाड़ आ गया है और इस्लाम की शुद्ध शिक्षानुसार कोई नहीं चल रहा था, यदि हमने इस्लाम की शुद्ध शिक्षा पर चलना है तो मसीह मौऊद को मानो, हमने इस लिए माना है। इसके बाद फिर क्या हमने अपनी बुराईयाँ छोड़ दी हैं? झूठ एक ऐसी बुराई है जो

प्रत्यक्षतः छोटी लगती है, परन्तु बहुत बड़ी है और यदि यथार्थ की दृष्टि से देखें तो सम्भवतः अधिकांश इस बुराई में लिप्त हों। अतः बैअत और तक़्वा के लिए यह अनिवार्य है कि हम इस बुराई से बचें तथा यहाँ अनेक ऐसे हैं जो इस लिए आए हैं कि दीन के कारण बाहर निकले हैं। अपने देश में उनको दीन के अनुसार कर्म करने की अनुमति नहीं थी। स्वतंत्रता पूर्वक अपने दीन को प्रकट करने की अनुमति नहीं थी। तो हमें तो अत्यधिक विशेष रूप से, पश्चिमी देशों में रहने वाले लोगों को बड़ी सावधानी बरतनी चाहिए कि हमारा तनिक सा भी कोई काम ऐसा न हो जिससे यह प्रकट होता हो, अथवा हमारी ज़बान से कोई ऐसा शब्द न निकले जिससे यह प्रकट होता हो कि यह झूठ है अथवा हम अनुचित प्रकार के लाभ प्राप्त कर रहे हैं। अतः तक़्वा के स्तर को सम्मुख रखते हुए प्रत्येक को आत्म निरीक्षण करने की आवश्यकता है।

फिर अल्लाह तआला के भय के विषय में आप फ़रमाते हैं कि अल्लाह का भय उसी में है कि इंसान देखे कि उसकी कथनी करनी कहाँ तक एक दूसरे के साथ मेल खाती है। बातें वह क्या कर रहा है, कर्म क्या कर रहा है। इनमें परस्पर सम्बंध है, एक दूसरे से मिलते हैं अथवा विरुद्ध हैं। फिर देखे कि उसकी कथनी करनी बराबर नहीं तो समझ ले कि वह अल्लाह के प्रकोप के नीचे होगा। जो दिल अपवित्र है, चाहे कथन कितना ही पवित्र हो वह दिल ख़ुदा की दृष्टि में मूल्य नहीं पाता। यदि दिल गन्दा है और कर्म इसके अनुसार नहीं है फिर चाहे जितनी मर्ज़ी हम नेक बातें करते रहें अल्लाह तआला की दृष्टि में इसका कोई मूल्य नहीं बल्कि ख़ुदा के प्रकोप को जोश आएगा, अल्लाह तआला सबको इससे बचाए। फ़रमाया- अतः मेरी जमाअत समझ ले कि वे मेरे पास आए ही इसी लिए हैं कि बीजारोपण किया जावे जिसके कारण वह फलदार वृक्ष हो जावे। अतः प्रत्येक अपने ऊपर विचार करे कि उसका अंतर्मन कैसा है, उसकी भीतरी अवस्था कैसी है। यदि हमारी जमाअत भी, ख़ुदा न करे ऐसी ही है कि उसकी ज़बान पर कुछ है और दिल में कुछ है तो फिर शुभ समापन न होगा।

फिर आप फ़रमाते हैं कि हमारी जमाअत के लिए विशेष रूप से तक़्वा की आवश्यकता है। विशेषकर इस विचार से भी कि वे एक ऐसे व्यक्ति से सम्बंध रखते हैं तथा उसके सिलसिले की बैअत में हैं जिसका दावा नियुक्ति का है, ताकि वे लोग जो चाहे किसी प्रकार के द्वेषों, घृणाओं अथवा शिर्कों में लिप्त थे अथवा कैसे ही दुनया की ओर झुके हुए थे, इन समस्त दुविधाओं से मुक्ति पावें। आप फ़रमाते हैं- आप जानते हैं कि यदि कोई बीमार हो जावे, चाहे उसकी बीमारी छोटी हो या बड़ी, यदि उस बीमारी के लिए दवा न की जावे और इलाज के लिए दुःख न उठाया जावे, बीमार अच्छा नहीं हो सकता। एक काला धब्बा मुंह पर निकल कर एक बड़ी चिंता पैदा कर देता है कि कहीं यह धब्बा बढ़ता बढ़ता मुंह को काला न कर दे। इसी प्रकार पाप भी एक धब्बा है। छोटे पाप निश्चिंत रहने के कारण बड़े बन जाते हैं। फ़रमाया- छोटे पाप का वही छोटा धब्बा जो बढ़कर अन्ततः पूरे मुंह को काला कर देता है। ये छोटे पाप ही हैं जो बड़े गुनाह बनते हैं और इंसान को काला कर देते हैं। अल्लाह तआला हमें रमज़ान के इस विशेष वातावरण में अपने आदेशों के अनुसार तक़्वा धारण करने का सामर्थ्य प्रदान करे और हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत के वे लोग बनें जो हर प्रकार की बुराईयों से बचने वाले तथा ख़ुदा तआला की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए अपने प्रत्येक कर्म को ढालने वाले हों और इस महीन में से ऐसे पाक होकर निकलें तथा नेकियों पर ऐसे स्थापित हों कि हमारी छोड़ी हुई बुराईयाँ अथवा छूटी हुई बुराईयाँ फिर पुनः वापस न आएँ। अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ दे।